Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 9, Sept - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Received on : 05/09/2021 Accepted on : 20/09/2021 Publication Date: 30/09/2021

हिंदी में वैज्ञानिक एवं व्यवसायिक लेखन: समाजभाषावैज्ञानिक पहलू

डॉ. रणजीत भारती
सहायक प्रोफेसर, भाषाविज्ञान विभाग, डॉ .बी .आर .आंबेडकर वि .वि., आगरा, भारत
ईमेल - ranjeet.dbrau@gmail.com

सारांश (Abstract) **:**प्रस्तुत प्रपत्र में हिंदी में पटकथा, लघुकथा, संस्मरण आदि व्यवसायिक लेखन के लिए भाषा एवं उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान की आवश्यकता और उपयोगिता के साथ-साथ हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की सोदाहरण चर्चा की गई है। इसके माध्यम से हम समाजभाषावैज्ञानिक ज्ञान के बारे में जानेंगे जिसका उपयोग कर हम हिंदी में व्यवसायिक लेखन को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। इसके अलावा इस प्रपत्र में हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की विशेषताओं की भी चर्चा की गई है और हिंदी में व्यवसायिक लेखन एवं वैज्ञानिक (अकादमिक) लेखन के अंतर को स्पष्ट किया गया है। इसमें हिंदी भाषा के सामाजिक जुड़ाव को लेखनी के द्वारा उजागर करने के लिए भाषावैज्ञानिक ज्ञान की आधारभूत जानकारी की उपयोगिता एवं भाषा के द्वारा उसकी संस्कृति को उजागर करने एवं अलग-अलग समाज के भाषाई स्वरूप को लेखनी में समाहित कर पटकथा, लघुकथा आदि लेखन में जीवंतता लाने की कला का विश्लेषण भी किया गया है। जो हिंदी में लेखन के दो स्वरूपों वैज्ञानिक (अकादमिक) और व्यवसायिक लेखन के बीच के अंतर को समझने में सहायक होंगे ।

मुख्य शब्द (Key Words) : (समाजभाषावैज्ञानिक ज्ञान, हिंदी, भाषा, व्यवसायिक एवं वैज्ञानिक लेखन ।

1. परिचय (Introduction) :

व्यवसायिक लेखन की अनेक विधाएं होती हैं, जैसे; थिएटर, समाचार, ड्रामा, नाटक, गीत आदि। इन सभी विधाओं से जुड़े पात्रों का संबंध किसी न किसी समाज और उसकी भाषा से जुड़ा होता है। किसी भी समाज की पहचान उसके भाषा और संस्कृति से पता लगता है। एक पटकथा लेखक अपनी लेखनी के माध्यम से भाषा एवं संस्कृति में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। पटकथा वही अच्छी मानी जाती है जिसकी भाषा विषयवस्तु को उसके उसी रूप में व्याख्यायित करने में सक्षम हो। पटकथा लेखन के लिए किसी भाषा का उस समाज पर प्रभाव एवं किसी समाज का भाषा पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना जरूरी होता है। इसका अध्ययन समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। समाजभाषावैज्ञानिक ज्ञान लेखक की कल्पना को भाषाबद्ध करने में सहयोगी होती है। समाजभाषावैज्ञानिक ज्ञान का निर्धारण समाज में मौजूद विभिन्न चरों (वैरिएबल्स) के आधार पर किया जाता है। सामाजिक चर वे भाषिक ईकाइयां होती हैं जो दो या दो से अधिक भागों में विभाजित की जा सकें। इन चरों के निर्धारण में समाज के बारे में जानकारी तथा उनके लेखन में जीवंतता लाने एवं व्यवसायिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए उस समाज विशेष की भाषा और उसकी समाजभाषावैज्ञानिकता की जानकारी होना आवश्यक होता है। जो पटकथा लेखन को जीवंत बनाता है।

वैज्ञानिक लेखन का संबंध अविधापरक लेखन से होता है। इसमें साहित्यिक विशेषताओं जैसे; छंद, अलंकार एवं लक्षणा एवं व्यंजना का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसमें किसी बात को बताने के लिए अनावश्यक विशेषण का प्रयोग न करके सीधे मुद्दे की बात की जाती है। इस तरह के लेखन का प्रयोग साहित्य से इतर विषयों जैसे; विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानवीकी, तकनीकी, एवं अकादमिक लेखन में किया जाता है।

2. साहित्यिक सर्वे (Literature Review):

पटकथा लेखक पत्रकार एवं साहित्यकार मनोहर श्याम जोशी ने अपनी पुस्तक पटकथा लेखन-एक परिचय में लिखा है – "पटकथा कुछ और नहीं कैमरे से फिल्म के पर्दे पर दिखाए जाने के लिए लिखी गई कथा है।" डॉ .विजय शिंदे ने अपनी पुस्तक "पटकथा कैसे लिखे "में पटकथा लेखन के दो तरिकों -दृश्य एवं श्रव्य या ध्वनि की चर्चा की है। इसके अलावा उन्होंने पटकथा लेखक के गुणों को दो भागों में बांटा है -1 .स्वाध्याय श्रेणी के गुण 2. व्यावसायिक श्रेणी के गुण। इसके अंतर्गत उन्होंने भाषा पर असाधारण पकड़ की चर्चा की है। अर्थात भाषा की समझ का व्यवसायिक पटकथा लेखक बनने में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपरोक्त पुस्तकों में पटकथा लेखक के लिए समाज के भाषाई रूप को समझने की बात नहीं की गई है। अतः इस प्रपत्र में हिंदी भाषा की समझ एवं उसके सामाजिक स्वरूप की चर्चा की गई है। जो पटकथा लेखन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। वैज्ञानिक लेखन या साहित्य से अलग हिंदी में लेखन के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा बनाएं गए दिशानिर्देशों के प्रति अभी भी बहुत से हिंदी लेखक सजग नहीं है। निदेशालय द्वारा हिंदी वर्तनी को लेकर एक पुस्तिका बनाई है जिसे निदेशालय की वेबसाइट से निशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसका उपयोग हमें समस्त भारतीयों को लेखन में करना चाहिए क्योंकि यह आधुनिक कम्प्यूटर आधारित टंकण पर आधारित है। जैसे; हिन्दी की जगह हिंदी का लेखन, विद्या जैसे शब्दों में हलंत का प्रयोग आदि।

3. सामग्री (Materials):

इस प्रपत्र लेखन में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा वैज्ञानिक हिंदी लेखन के लिए बनाएं गए दिशानिर्देशों को सामग्री के तौर पर प्रयोग किया गया है। इसके अलावा विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि पर बनीं हिंदी फिल्मों के लेखन की संरचना का भी प्रयोग किया गया है।

4. प्रविधि (Method):

इस प्रपत्र में समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन में प्रयुक्त द्विपक्षीय चरों (बाइनरी वैरिएबल्स) को प्रविधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है। हिंदी की अलग-अलग बोलियों के मातृभाषियों का हिंदी बोलने में उच्चारणात्मक, शब्द चयन एवं व्याकरणिक भिन्नता संबंधी डाटा (उदाहरणों) के चुनाव के लिए अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है। इसके भोजपुरी, गढ़वाली, ब्रज एवं हरियाणवी के मातृभाषी को आधार बनाया गया है।

5. चर्चा (Discussion):

हिंदी लेखन को दो भागों में बांटा जा सकता है :

अ. वैज्ञानिक लेखन आ. व्यावसायिक लेखन।

अ. वैज्ञानिक लेखन- वैज्ञानिक लेखन व्यवसायिक लेखन (पटकथा, संवाद आदि) लेखन से भिन्न होता है। व्यवसायिक लेखन से पूर्व हिंदी भाषा के वैज्ञानिक लेखन के स्वरूप को जानना जरूरी होता ताकि हम दोनों के अंतर को समझ सकें। हिंदी में वैज्ञानिक लेखन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना जरुरी होता है :-

भाषा-शैली -वैज्ञानिक लेखन में निम्नलिखित शैलीगत निर्देशों को ध्यान में रखना चाहिए -

- वैज्ञानिक लेखन में वस्तुनिष्ठता होना चाहिए जैसे- उसमें व्यक्तिगत सर्वनामों 'मैं', मुझे आदि का कम से कम प्रयोग हो।
- लेखन में भावनात्मक एवं अलंकारिक अभिव्यक्तियों के प्रयोग से बचना चाहिए। जैसे- 'बड़े ही दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत में बाल मजदूरी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है...', 'इस तथ्य के बारे में कुछ कहना सूरज को दिया दिखाने जैसा है' आदि।
- तथ्य को संक्षेप, त्रुटिहीन एवं औपचारिक भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए।
- स्पष्ट, तार्किक एवं क्रमबद्ध शैली का प्रयोग करना चाहिए। अर्थात लेखन की शैली भाषण जैसा या पत्रकार के लेखन शैली के जैसा न हो। जैसे- 'इन तथ्यों से ऐसा लगता है कि...', 'इससे ऐसा कहा जा सकता है कि...' आदि। इस प्रकार का लेखन विश्लेषण में स्पष्टता के अभाव को दर्शाता है। इसे निम्नलिखित रूप में (इन तथ्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि...) होने से विश्लेषण में स्पष्टता स्वतः ही उजागर होती है।
- **उचित शब्दों का चयन** प्रत्येक अनुशासन की अपनी विशिष्ट शब्दावलियाँ होती हैं, और उनके प्रयोग की विशिष्टता भी अलग-अलग होती हैं। मुख्य रूप से समानार्थी शब्दों के चयन को लेकर सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वे समानार्थी तो होते हैं लेकिन उनमें सूक्ष्म अंतर होता है जो उनके प्रयोग से पता चलता है। जैसे -अनुपम, अद्वितीय में सामान्य स्तर पर एक 'सबसे बढ़िया' लिया जाता है लेकिन इनके अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है। अनुपम का अर्थ है -'जिसकी तुलना नहीं हो सकती' जबकि अद्वितीय का अर्थ 'जिस जैसा कोई नहीं' होता है। इसके अलावा किसी दूसरे भाषा के शब्दों का हिंदीकरण करते समय हमें सर्वप्रथम 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' द्वारा निर्मित शब्दों का अनुकरण करना चाहिए, यदि इसमें किसी शब्द का हिंदी न मिले तो लेखक को अपने तरफ से हिंदीकरण स्थानीय भाषा संरचना के अनुरूप करना चाहिए, और उसे परिशिष्ट के रूप में दर्शना चाहिए।
- **शब्दों की एकरूपता :** लेखन करते समय यह भी ध्यान देना चाहिए की यदि किसी शब्द के एक से अधिक रूप प्रचलित हैं तो उनके किसी एक रूप को ही पूरे शोध में लिखें, न कि एकाधिक रूप को। जैसे -हिंदी/हिन्दी आदि में से या तो 'हिन्दी' का प्रयोग पूरे लेख में किया जाना चाहिए या फिर 'हिंदी' का।
- **कथ्य की संशक्ति :** किए गए कार्यों को सहज बोध कराने के लिए कथ्यों को व्यवस्थित रूप में संपादित करना जरुरी होता है। ऐसा न करने पर लेखन द्वारा प्रकट विचारों की संशक्ति भंग होती है। अतः कथ्य को सहज बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित क्रम में लिखना आवश्यक होता है। जैसे; कम्प्यूटर जैसे तकनीकी विषयों को बताते समय आत्मा-परमात्मा की बाते नहीं लिखनी चाहिए।

आ. व्यवसायिक लेखन :

इस प्रकार के लेखन के लिए भाषा के द्वारा दृश्य एवं श्रव्य दोनों स्वरूप को ध्यान में रखना होता है। इसके अलावा पटकथा में अभिनय करने वाले पात्रों के सामाजिक परिवेश के अनुरूप भाषा एवं भाषाशैली का चयन करना होता है। अत : इसकी संरचना वैज्ञानिक लेखन की भाषा से बिल्कुल भिन्न होती है, क्योकि यह समाज में प्रचलित भाषा के अनुरूप रची जाती है। इसके लिए पटकथा लेखक को समाजभाषाविज्ञान की जानकारी का होना सहायक सिद्ध होता है। प्रसिद्ध अमेरिकन समाजभाषाविद 'विलियम

लेबव' ने अपनी पुस्तक 'सोसियोलिंग्विस्टिक पैटर्न्स' में सबसे पहले समाजभाषाविज्ञान की महत्ता को उजागर करते हुए कहा है कि -'अब तक के भाषावैज्ञानिक अध्ययन में भाषिक वैरिएंट का सामाजिक दृष्टि से विचार एवं मूल्यांकन नहीं किया गया है। इसमें उन्होंने यह क्लेम किया किया कि भाषा के अध्ययन में भाषेत्तर इकाइयों का भी प्रयोग करना चाहिए।' समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत समाज का भाषा पर एवं भाषा के समाज पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। यह भाषावैज्ञानिक अध्ययन का अनुप्रयुक्त क्षेत्र है जो समाज के विभिन्न स्तरों, वर्गों, व्यवसायियों आदि द्वारा बोली जाने वाली भाषा के स्वरूपों का अध्ययन विश्लेषण करता है।

आज के दौर में पटकथा लेखन में हिंदी की उपभाषाओं या लोकभाषाओं के प्रयोग में तेजी आयी है। लोक भाषा सर्वसाधारण जन की भाषा होती है। इस भाषा के मौखिक रूप का चलन ज्यादा होता है। यह उन लोगों की भाषा है जिन पर भाषाई बाजारवाद हावी नहीं है। इसे कम पढ़े-लिखे लोगों की भाषा भी कह सकते हैं। इसकी सबसे बड़ी खासियत है कि यह लोक संस्कृति एवं संस्कार से जुड़ी होती है। हिंदी की उपभाषाएँ जैसे -भोजपुरी, अवधी, ब्रज, बुंदेली, मारवाड़ी, राजस्थानी आदि को लोकभाषा या बोली कहा जा सकता है। यदि भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो उपभाषा और लोकभाषा एक सामाजिक या राजनैतिक शब्द है। वैसे सभी को भाषा ही कहते है लेकिन अलग-अलग लोग उसके बोलने वालों की संख्या, भौगोलिक परिवेश, राजनैतिक कारण आदि के आधार पर उपभाषा या जनभाषा आदि नाम दे देते हैं। हिंदी भाषा के विस्तार को इससे मिलती जुलती भाषाओं को ध्यान में रखकर पाँच उपभाषाओं एवं 17 बोलियों में वर्गीकृत किया गया है। जिनमें से कुछ भाषाओं का मौखिक रूप ज्यादा प्रयुक्त होता है ऐसी भाषाओं को लोक भाषा की श्रेणी में रखा जा सकता है। भाषा का कोई भी रूप हो उसका प्रमुख कार्य संप्रेषण होता है। भाषा के किस रूप से संप्रेषणीयता अधिक होती है, यह समाज और उसमें प्रयुक्त भाषा के स्वरूप पर निर्भर करता हैं।

6. विश्लेषण (Analysis):

समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण को निम्नलिखित स्तरों पर किया गया है-

सामाजिक स्तर का ज्ञान- समाजभाषाविज्ञान में समाज को अलग-अलग स्तरों जैसे; व्यवसाय- डॉक्टर, इंजिनीयर, शिक्षक, पुलिस, फौजी आदि, जाति/वर्ग - उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, पिछड़ा वर्ग आदि, शिक्षा- मैट्रिक, स्नातक, डॉक्टरेट आदि, भाषा- तमिल, हिंदी, मराठी, गुजराती आदि के आधार पर वर्गीकृत कर उनके द्वारा बोली गई भाषा के बीच के अंतर को भाषाविज्ञान के विविध स्तरों -ध्वनि, शब्द, वाक्य (व्याकरण) एवं अर्थ पर विश्लेषित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर शाहिद कपूर और श्रद्धा कपूर की फिल्म 'बत्ती गुल और मीटर चालू' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। सितंबर 2018 को रिलीज हुई फिल्म के डायलॉग बेहद झिलाऊ हैं। उत्तराखंड को बैकड्रॉप में रखकर तैयार की गई इस फिल्म में श्रद्धा और शाहिद स्थानीय एक्सेंट को कॉपी करने में बुरी तरह फेल नजर आ रहे हैं। फिल्म के अधिकतर डायलॉग्स में उत्तराखंड की दो अलग-अलग बोलियों के तकिया कलाम के शब्द का यूज बेवजह किया गया है। कहना गलत नहीं होगा कि फिल्म को आधी-अधूरी रिसर्च के आधार पर जल्दबाजी में बनाया गया है। (दैनिक भाष्कर) यह पटकथा लेखन में समाजभाषावैज्ञानिक ज्ञान के प्रयोग अभाव के कारण हुआ है।

उच्चारण भिन्नता का ज्ञान -समाजभाषाविज्ञान समाज में भाषाई विभिन्नता का अध्ययन करता हैं। जैसे; यदि हम हिंदी का शब्द 'प्रणाम' के उच्चारण को देखे तो इसके कई उच्चारण -'परनाम', पड़ाम, प्रनाम और प्रणाम मिलते हैं। इन अलग-अलग उच्चारणों के जरिए इसके बोलने वाले लोगों के भाषिक स्तर एवं सामाजिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है। किसी व्यक्ति के उच्चारण का तरीका उसकी सामाजिक पहचान को दर्शाता है। पटकथा लेखक को हिंदी के बोलियों में बदलाव के तरीके का जानना जरुरी होता है। हिंदी की बोलियों के उच्चारण वार्तालाप के तौर तरीके में हिंदी से भिन्न होते हैं। जैसे; अवधी, ब्रज, भोजपुरी मातृभाषियों के हिंदी उच्चारण में भिन्नता। ब्रज भाषी 'ए' की मात्रा को 'ऐ' के रूप में उच्चरित करता है। हिंदी भाषी के 'सेल' ब्रज भाषा (बोली) में उच्चारण 'सैल' के रूप में किया जाता है। इसी प्रकार भोजपुरी भाषी अक्सर 'स' का उच्चारण 'श' के रूप में करता है। इसी प्रकार हरियाणवी में 'र' का उच्चारण 'ण' के रूप में किया जाता है।

उच्चारण नजरिया (एटिट्यूड) का ज्ञान -उच्चारण के तरीके से नजरिया का पता चलता है। जिसे लेखन में समाहित करने से समाज का वास्तविक रूप शब्दों में दिखने लगता है। इसकी समझ लेखन को वास्तविक रूप देने में सहायक होता है। क्योंकि ये नजरिया) एटिट्यूड (सामाजिक नार्म के रूप में कार्य करते हैं। जिनका संबंध व्यक्तिनिष्ठता (सब्जेक्टिविटी) से होता है, न कि वस्तुनिष्ठता से। पटकथा का मूल आधार व्यक्तिगत नजरिया होता है पटकथा लेखन एवं फिल्मांकन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक ही बात को एक इंसान अलग-अलग तरीकों से बोलता है। जो उसके द्वारा व्यक्त अर्थ को प्रदर्शित करता है। इसे भाषाविज्ञान में सुपरासिगमेंटल फीचर कहते हैं। जिसके अंतर्गत सुर, लय, ताल, बलाघात आते हैं।

शाब्दिक भिन्नता का ज्ञान -शब्द के स्तर पर भी हिंदी भाषा और उसकी बोलियों में अंतर मिलता है। इसको समझने के लिए हमें सबसे पहले किसी भाषा में प्रयुक्त ऐसे शब्द को जानना जरुरी होता है जो उस भाषाई समाज के लोगों की पहचान के रूप में स्थापित होता है। इसे आम भाषा में 'तकिया कलाम' भी कहते हैं। जैसे; मराठी भाषी हिंदी बोलते समय 'बराबर है' शब्द पुंज का अक्सर इस्तेमाल करता है, इसी प्रकार गुजराती 'जय श्रीकृष्ण' का इस्तेमाल करता है। इसी प्रकार ब्रज भाषी 'राधे-राधे' तो गढ़वाली में 'ठहरा' शब्द को तकिया कलाम के रूप में प्रयोग किया जाता है।

व्याकरणिक भिन्नता का ज्ञान -हिंदी भाषा में लेखन करते समय किसी पात्र के सामाजिक स्तर के आधार ही उसकी भाषा के व्याकरणिक स्वरूप की रचना होती है। जैसे; 'चेन्नई एक्प्रेस' फिल्म की व्याकरणिक संरचना फिल्म की नायिका के हिंदी भाषाई व्याकरण के अनुरूप लिखी गई, जिससे हमें यह पता चलता है कि एक तमिल भाषी हिंदी बोलते समय लिंग, वचन एवं वाक्य संरचना में किस प्रकार अशुद्धियां करते हुए बोलता है। इसी फिल्म 'दिल्लगी' के नायक द्वारा संस्कृत अध्यापक की भूमिका में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग कर लेखक ने पटकथा को जीवंत बना दिया है।

7. उपलब्धियां (Findings):

इस प्रपत्र के माध्यम से हमें इस बात का पता चलता है कि वैज्ञानिक लेखन जहां बात को सीधे अर्थो में या फिर अविधापरक भाषा का प्रयोग किया जाता है जबकि व्यवसायिक लेखन या पटकथा लेखन में भाषा के सामाजिक परिवेश के अनुसार व्यक्तिनिष्ठ भाषा और लक्षणा, व्यंजना का प्रयोग किया जाता है। जिससे हम पटकथा में अभिनित पात्रों के अलग-अलग सामाजिक नजरिया (एटिट्यूड) को चित्रित किया जा सके।

8. परिणाम (Result):

वैज्ञानिक या अकादमिक हिंदी की संरचना एवं व्यवसायिक हिंदी की संरचना को के अंतर को हम निम्नलिखित प्रकार से समझ सकते हैं:

वैज्ञानिक या अकादमिक हिंदी की संरचना	व्यवसायिक हिंदी की संरचना
अविधापरक भाषिक संरचना	लक्षणा एवं व्यंजना युक्त भाषिक संरचना
मानक वर्तनीयुक्त संरचना	सामाज विशेष के उच्चारण के अनुरूप संरचना
शब्द के लेखन में समानता	शब्द के लेखन में समाज के अनुरूप भिन्नता
वाक्य का व्याकरण सम्मत प्रयोग	वाक्य में व्याकरणगत त्रुटियां आदि

सारणी 1.1

9. निष्कर्ष (Conclusion) :

हिंदी लेखन का साहित्यिक स्वरूप अत्यंत ही विकसित एवं समृद्ध है। जबकि हिंदी में व्यवसायिक लेखन अभी भी ज्यादातर फिल्मों तक ही सीमित है। हिंदी में वैज्ञानिक या अकादमिक लेखन की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। इन सभी विधाओं में हिंदी लेखन करने के लिए हिंदी के विविध लेखन स्वरूप को स्पष्ट करने में यह प्रपत्र उपयोगी होगा। हिंदी भाषा के व्याकरण पर पर्याप्त चर्चा मिलती है लेकिन इस व्यवसायिक एवं अकादमिक संरचना को अलग देखने की आवश्यकता है जिससे कि हिंदी न केवल मनोरंजन एवं अनुवाद की भाषा न रहे बल्कि ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची (References):

1. जोशी, मनोहर श्याम, पटकथा लेखन एक परिचय; राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (2000)
2. Hudson, RA, Sociolinguistics, Cambridge University Press, UK, 2nd edition (1996)
3. Labov, William, Sociolinguistic patterns, University of Pennsylvania Press, USA, (1972)

वेबसाइटें (Websites):

- https://www.bhaskar.com/news/trailer-of-batti-gul-meter-chalu-wrong-use-words-of-dialect-with-thahra-and-bal-.5935478html
- http://www.chdpublication.mhrd.gov.in/
- https://www.rachanakar.org//02/2020script-writing.html